NATIONAL SCHOOL OF DRAMA
<u>NEW DELHI</u>

The following guideline is only for those who have shortlisted for appearing in the Joint Entrance Examination for admission to Three Year Diploma course in Dramatics in the National School of Drama, New Delhi and the One Year Certificate course at the four centres of NSD.

The interview will have the following sections:-

Written test
Practical Test
Analytical capacity Test

1. Written Test:

This is to test the student's critical aptitude and power of expression in Hindi or in English.

2. Practical Test:

a) One dramatic passage to be prepared and enacted. This is to be chosen from among the passages provided.

b) One dramatic passage of his/her choice to be enacted in any language.

c) Ability to sing/play instrument and to dance/movement/yoga.

3. Oral Test:

This is to test:

a) General Knowledge regarding theatre and other performing arts.

b) The candidate's ideas and the capacity to express them.

c) Understanding & Analysis from among the list of plays provided. The candidates should be prepared to discuss any two plays mentioned in the list enclosed.

****

READING MATERIAL

S. No.	Writer Name	Play Name
1.	Kalidasa	Abhijnanasakuntalam
2.	Bhasa	Karnabharam / Madhyam Vyayoga
3.	Rabindra Nath Tagore	Dak Ghar
4.	Jaishankar Prasad	Dhruvswamini
5.	Bijan Bhattacharya	Nabanna
6.	Mohan Rakesh	Adhe Adhure
7.	Badal Sircar	Baaki Itihaas
8.	Vijay Tendulkar	Sakharam Binder
9.	C.S. Kambar	Jo Kumaraswamy
10.	Girish Karnad	Nagmandal
11.	Mahesh Elkunchwar	Virasat
12.	Satish Alekar	Mahanirvan
13.	Kavalam Narayan Panikkar	Theyya Theyyam
14.	Balwant Gargi	Loha Kutt
15.	Arun Sharma	Ahar
16.	Sanjay Pawar	Koan Mhanate Takka Dila?
17.	Sophocles	King Oedipus
18.	William Shakespeare	Macbeth
19.	Henrik Ibsen	A Doll's House
20.	Anton Chekhov	Three Sisters
21.	Bertolt Brecht	Caucasian Chalk Circle
22.	Moliere	The Bourgeois Gentleman/ Kuava Chale Hans Ki Chaal/ School for Wives/Bibion Ki Madrasa
23.	Arthur Miller	Death of a Salesman

Boys Speech

विदूषक :	(निःश्वास छोड़कर) मार दिया इस शिकारी राजा की मित्रता ने। गरमी की भरी दोपहर, दूर-दूर तक कहीं पेड़ों की छाया नहीं, और ऐसे में 'यह रहा हरिण, वह रहा सूअर, वह रहा बाघ' करते हुए जंगल-भर में घूमते फिरो और बाद में पियो सड़े पत्तों पर से होकर आता कसैला, बेस्वाद, कड़वा, गरम पानी-इन पहाड़ी नदियों का! खाने को अधिकतर जलता-जलता मांस, और वह भी जब जिस समय मिल जाय ! हाथी-घोड़ों के चिंघाड़ने-हिनहिनाने से रात को भी ठीक से नींद नहीं आती और अब सुबह-सुबह ही इस हो-हल्ले ने मुझे जगा दिया है-दासी के बेटे तीतरमार शिकारी जंगल की ओर जा रहे हैं ! पर इतने से ही मेरा दुःख समाप्त नहीं होता-ऐसे में जले गाल पर एक फोड़ा और निकल आया है। अर्थात् पीछे रहकर यह सब दुःख भोग ही रहा था कि दुर्भाग्य की एक और मार सिर पर आ पड़ी है! मृग का पीछा करते राजा ने आश्रम में जाकर वहाँ शकुंतला नाम की किसी तपस्वी-कन्या को देख लिया है। उसे देख लेने के बाद अब लौटकर नगर चलने की बात ही नहीं करता ! यह सब सोचते हुए आँखों में ही रात बीत गई। पर किया क्या जाय ? प्रिय मित्र ने अब तक समय के अनुकूल वेश धारण कर लिया होगा, तो चलकर उसी से मिला जाय।

नाटक का नाम : शाकुंतल
नाटककार का नाम : कालिदास

मैकबेथ:	क्या यह कटार है जो मुझे दिखती है ? मूठ मेरी ओर है; आ तुझे उठा लूँ हाथ में नहीं आयी फिर भी वहीं रक्खी है अपशकुन, क्या तू सिर्फ दृष्टि की पकड़ में आता है हाथ की नहीं ? या तू सिर्फ माया है मेरे उद्विग्न मानस से उपजी हुई ? मैं देख रहा हूँ तुझे उसी ठोस रूप में जिसमें यह है कि जिसे मैंने खींचा है, तू मुझे वहीं लिये जाती है जहाँ मैं जाता था औ' तेरे ही समान मेरा हथियार होता या बाकी इन्द्रियाँ मिल करके आँखों को ठगती हैं। या आँखों ने ही शक्ति सबकी हड़प ली है तू वहीं स्थिर है औ' तेरे फल पर तेरे हत्थे पर खून के धब्बे हैं जो पहले नहीं थे नहीं, नहीं, कुछ नहीं यह मेरी वासना है जो रूप धरती है आधा विश्व इस समय मुर्दे सा पड़ा है और सुखद सेजों पर नींद के भयानक स्वप्न जागृत हैं प्रेत औं' पिशाच रंगरेलियाँ मनाते हैं मौत अपने प्रहरी श्वान की पुकार सुन चकित और चौकन्नी बड़े बड़े डग भरती दबे पाँव आगे को बढ़ती है दृढ़ धरती, मत सुन आहट मेरी जान मत कि पाँव मेरे किस ओर जाते हैं

नाटक का नाम : बरनम वन
नाटककार का नाम : शेक्सपियर

सखाराम:	ठीक से देख-दाख लो। समझ में आये तो डालो पोटली नीचे नहीं तो ऐसी ही निकल जाओ बाहर। यह राजा का महल नहीं, सखाराम बाइंडर का घर है। सखाराम बाइंडर तुम्हारे पहलेवाले आदमी की तरह नहीं है। वह क्या है यह अलग से समझना पड़ेगा तुम्हें। सब घोड़े बारह टकेवाला हिसाब यहाँ नहीं चलेगा। दिमाग गरम है अपना। गुस्सा आया तो मार-मार के भुरता बना दूँगा। क्या समझी? मुँहफट हूँ। मुँह में गाली और बीड़ी हर वक्त मौजूद रहती है। सारा गाँव यह कहता है। हालत बहुत अच्छी नहीं पर खाने को दोनों टाइम जरूर मिलेगा। दो धोती शुरू में। फिर साल में एक। वह भी बढ़िया नहीं, मामूली। बाद में किटकिट सुनूँगा नहीं। घर का सब काम कायदे से और बिना भूल-चूक के करना पड़ेगा। निकम्मापन दिखायी दिया नहीं कि घर से बाहर। कोई रियायत नहीं। बाद में तोहमत न देना। अपने घर में राजा की तरह रहता हूँ। गाँव में मियाँ-बीबी की तरह रहें या नहीं, घर, घर जैसा चाहिए मुझे। क्या समझीं?

नाटक का नाम : सखाराम बाइन्डर
नाटककार का नाम : : विजय तेंदुलकर